शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत
बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

ने (9 जुमादल ऊला 1410 हि./7 दिसम्बर 1989 ई.) बरोज़ जुमा'रात हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में दा'वते इस्लामी के अव्वलीन म-दनी मर्कज़ जामेअ़ मस्जिद गुलज़ारे ह़बीब (वाक़ेअ़ गुलिस्ताने ओकाड़वी बाबुल मदीना कराची) में "ग़ुरबत की ब-र-कतें" के उ़न्वान से बयान फ़रमाया, जिस की मदद से येह रिसाला नए मवाद के काफ़ी इज़ाफ़े के साथ मुरत्तब किया गया है।(मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج۱ص۴۰دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ग़रीब फ़ाएदे में है

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ का येह बयान मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409
E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

ग़रीब फ़ाएदे में है

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला अव्वल ता आख़िर मुकम्मल पढ़ लीजिये । اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सवाब के ख़ज़ानए ला जवाब के साथ साथ ग़ुरबत के फ़ज़ाइलो ब-रकात की मा'लूमात भी ह़ासिल होंगी ।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

सह़ाबिये मुस्त़फ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के वालिदे गिरामी ह़ज़रते सय्यिदुना समुरह सुवाई رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत फ़रमाते हैं कि हम सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबारे गुहर-बार में ह़ाज़िर थे कि एक शख़्स ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में सब से अच्छा अ़मल कौन सा है ? तो मह़बूबे ख़ुदा, सरवरे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''सच बोलना और अमानत अदा करना ।'' (राविये ह़दीस ह़ज़रते सय्यिदुना समुरह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं)

मैं ने अ़र्ज़ की **: या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **!** मज़ीद कुछ इर्शाद फ़रमाइये ! फ़रमाया **:** ''कस्रते ज़िक्र और मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना कि येह अ़मल **फ़क्र** (या'नी गुरबत) **को दूर करता है ।''**

(القول البديع،الباب الثانی فی ثواب الصلاۃ علی رسول اللّٰہ....الخ، ص۲۷۳ مختصراً)

बहरे रफ़्ए म-रज़ो ज़ह्मतो रन्जो कुल्फ़त ढूंडते फिरते हैं वोह लोग कहां का ता'वीज़

तुम पढ़ो साहिबे लौलाक पे कसरत से दुरूद है अ़जब दर्दे निहां और अमां का ता'वीज़

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की क़नाअ़त

ह़ज़रते सय्यिदुना सुवैद बिन ग़फ़ला رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की ख़िदमते सरापा अ़-ज़मत में दारुल इमारत कूफ़ा में ह़ाज़िर हुवा । आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم के सामने **जव शरीफ़** की रोटी और दूध का एक पियाला रखा हुवा था, रोटी ख़ुश्क और इस क़दर सख़्त थी कि कभी अपने हाथों से और कभी घुटने पर रख कर तोड़ते थे । येह देख कर मैं ने आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की कनीज़ **फ़िज़्ज़ा** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا से कहा **:** आप को इन पर तर्स नहीं आता ? देखिये तो सही रोटी पर भूसी लगी हुई है इन के लिये **जव शरीफ़** छान कर नर्म रोटी पकाया करें । ताकि तोड़ने में मशक़्क़त न हो । **फ़िज़्ज़ा** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने जवाब दिया **: अमीरुल मुअमिनीन** كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने हम से अ़ह्द लिया है कि इन के लिये कभी भी

जव शरीफ़ छान कर न पकाया जाए । इतने में **अमीरुल मुअमिनीन** كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم मेरी त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए और फ़रमाया : ऐ इब्ने ग़फ़ला ! आप इस कनीज़ से क्या फ़रमा रहे हैं ? मैं ने जो कुछ कहा था अ़र्ज़ कर दिया और इल्तिजा की **: या अमीरल मुअमिनीन !** आप अपनी जान पर रह़्म फ़रमाइये और इतनी मशक़्क़त न उठाइये । तो आप كَرَّمَ اللهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने फ़रमाया : ऐ इब्ने ग़फ़ला ! दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की म-दनी सरकार, मह़बूबे परवर दगार عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और आप के अहलो इ़याल ने कभी तीन दिन बराबर गेहूं की रोटी शिकम सैर हो कर नहीं खाई और न ही कभी आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये आटा छान कर पकाया गया । एक दफ़्आ़ मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में भूक ने बहुत सताया तो मैं मज़दूरी के लिये निकला, देखा कि एक औ़रत मिट्टी के ढेलों को जम्अ़ कर के उन को भिगोना चाहती थी मैं ने उस से फ़ी डोल एक खजूर उजरत त़ै की और सोलह डोल डाल कर उस मिट्टी को भिगो दिया यहां तक कि मेरे **हाथों में छाले पड़ गए** फिर वोह खजूरें ले कर मैं हु़ज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह़्तशम, शाफ़ेए़ उमम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हु़ज़ूर ह़ाज़िर हुवा और सारा वाक़िआ़ बयान किया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने भी उन में से कुछ खजूरें तनावुल फ़रमाईं । (**تذكرة الخواص ،الباب الخامس،ص١١٢**, फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 369)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो ।**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दिल को नर्म करने का नुस्ख़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की सादगी पर हमारी जान क़ुरबान हो। इतनी इतनी मशक़्क़तें बरदाश्त करने के बा वुजूद ज़बान पर कभी ह़र्फ़े शिकायत न लाते। ग़िज़ा के साथ साथ आप का लिबास भी इन्तिहाई सादा हुवा करता था। एक बार आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की ख़िदमत में अ़र्ज़ की गई, आप अपनी क़मीस में पैवन्द क्यूं लगाते हैं ? फ़रमाया : **يَـخْشَعُ الْقَلْبُ وَ يَقْتَدِى بِهِ الْمُؤْمِنُ** या'नी इस से दिल में ख़ुशूअ़ पैदा होता है और इस से लोग बन्दए मोमिन की इक़्तिदा करते हैं। **(حلية الاولياء، على بن ابى طالب، ١/١٢٤، رقم:٢٥٤)**

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ुरबत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत, नबिय्ये रह़मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की चाहत, बहुत सारी फ़ज़ीलत और बे शुमार फ़वाइद का पेश-ख़ैमा है, इसी वज्ह से **अल्लाह** वालों ने ग़ुरबत को पसन्द फ़रमाया जैसा कि

ग़ुरबत के फ़वाइद

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन बश्शार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَفَّار फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم के हमराह सफ़र पर था और हम दोनों रोज़े से थे, मगर हमारे पास इफ़्त़ार के लिये

कुछ न था और न ही कोई ऐसे ज़ाहिरी अस्बाब नज़र आ रहे थे कि जिन से इफ़्तारी का इन्तिज़ाम किया जा सके। मेरी इस फ़िक्र को देख कर ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ इब्ने बश्शार (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَفَّار) ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **ने ग़रीबों और मिस्कीनों को दुन्या व आख़िरत में किस क़दर ने'मतों और राह़तों से सरफ़राज़ फ़रमाया है** बरोज़े क़ियामत न इन से ज़कात के बारे में पूछा जाएगा और न ह़ज व स-दक़ा और सिलए रेह़्मी व ह़ुस्ने सुलूक के बारे में ह़िसाबो किताब होगा, जब कि मालदारों से इन सब चीज़ों के बारे में सुवाल होगा। दुन्या के येह अमीर व सरमाया दार आख़िरत में ग़रीब व नादार और मह़ज़ दुन्यवी इ़ज़्ज़त दार वहां ज़लीलो ख़्वार होंगे, आप फ़िक्र न कीजिये, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ रोज़ी का ज़ामिन है वोह तुम्हारे लिये रिज़्क़ का इन्तिज़ाम फ़रमाएगा, हम इन दुन्यावी अमीरों से ज़ियादा अमीर हैं। दुन्या व आख़िरत में कामिल मसर्रत हमें ह़ासिल है न रन्जो ग़म है और न इस की परवाह कि हमारी सुब्ह़ कैसे हुई और शाम कैसे ? बस शर्त़ येह है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी के मुआ़-मले में कोताही आड़े न आने दें।"** येह फ़रमा कर आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه नमाज़ में मश्ग़ूल हो गए और मैं ने भी नमाज़ शुरूअ़ कर दी। थोड़ी ही देर बा'द एक शख़्स हमारे पास **8** रोटियां और बहुत सी खजूरें ले कर आया और येह कह कर वापस चला गया कि खाइये ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम पर रह़्म फ़रमाए। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم ने मुझ से फ़रमाया : "लीजिये और खाइये।" जूं ही हम खाना खाने लगे, एक साइल ने सदा लगाई कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम पर मुझे कुछ खाना दे दीजिये। ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन

अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْاَكْرَم ने तीन रोटियां और कुछ खजूरें उस ह़ाजत मन्द को दे दीं और फ़रमाया : **''ग़म ख़्वारी करना अहले ईमान का ह़िस्सा है।''** (روض الرياحين،ص۲۷۲)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّ وَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ النَّبِىِّ الْاَمين صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

मानिन्दे शम्अ़ तेरी त़रफ़ लौ लगी रहे   दे लुत़्फ़ मेरी जान को सोज़ो गुदाज़ का

क्यूंकर न मेरे काम बनें ग़ैब से ह़सन   बन्दा भी हूं तो कैसे बड़े कारसाज़ का

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب !   صَلَّى اللّٰهُ تعالٰى على محمَّد

गु़–रबा व फु़–क़रा 500 साल पहले जन्नत में

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा वाक़िए से पता चला कि फ़क़्रो ग़ुरबत बाइ़से सआ़दत है न कि बाइ़से आफ़त। ग़रीबों मिस्कीनों के आख़िरत में मज़े होंगे कि माली इ़बादात जैसे ज़कात, फ़ित्रा, ह़ज वग़ैरा के मु–तअ़ल्लिक़ पूछगछ से मामून (या'नी अम्न में) होंगे क्यूं कि येह अह़काम मालदार व साह़िबे इस्तित़ाअ़त मुसल्मानों के लिये हैं। बरोज़े मह़शर जब कि मालदार बारगाहे रब्बे ज़ुल जलाल عَزَّ وَجَلَّ में अपने माल के मु–तअ़ल्लिक़ ह़िसाब किताब देने में मश्ग़ूल होंगे, इधर नादार मुसल्मान **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की रह़मत व मशिय्यत से दाख़िले जन्नत हो रहे होंगे और यूं जन्नत में फ़क़ीरों, ग़रीबों का दाख़िला अमीरों से पहले होगा जैसा कि

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : "**मुसल्मान फ़ु-क़रा** अग़्निया से आधा दिन पहले जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे और वोह (आधा दिन) 500 साल (के बराबर) होगा ।"

(ترمذی، کتاب الزهد، باب ما جاء ان فقراء المهاجرين الخ، ٤/١٥٨، حديث:٢٣٦١)

ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْغَنِى ग़रीबों के अमीरों से पांच सो साल पहले जन्नत में दाख़िले की वज़ाह़त करते हुए फ़रमाते हैं : ख़याल रहे कि येह देर ह़िसाब की वज्ह से न होगी रब तआ़ला सारे आ़लम का ह़िसाब बहुत जल्द लेगा येह उन फ़ु-क़रा की शान दिखाने के लिये होगी कि अमीरों को ह़िसाब के नाम पर रोक लिया गया और फ़क़ीरों को जन्नत की त़रफ़ चलता कर दिया गया । मुफ़्ती साह़िब رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه पांच सो साल की वज़ाह़त करते हुए फ़रमाते हैं : या'नी क़ियामत का दिन एक हज़ार बरस का है, रब तआ़ला फ़रमाता है : اِنَّ یَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٤٧﴾ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक तुम्हारे रब के यहां एक दिन ऐसा है जैसे तुम लोगों की गिनती में हज़ार बरस (پ١٧، الحج:٤٧)) हां बा'ज़ को पचास हज़ार साल का मह़सूस होगा, इन के मु-तअ़ल्लिक़ रब फ़रमाता है : فِیْ یَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِیْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ﴿٤﴾ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** वोह अ़ज़ाब उस दिन होगा जिस की मिक़्दार पचास हज़ार बरस है । (پ٢٩، المعارج:٤)) और बा'ज़ मुअमिनीन को घड़ी भर का मह़सूस होगा, रब तआ़ला फ़रमाता है : فَذٰلِكَ یَوْمَىٕذٍ یَّوْمٌ عَسِیْرٌ ﴿٩﴾ عَلَى الْكٰفِرِیْنَ غَیْرُ یَسِیْرٍ ﴿١٠﴾

(**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तो वोह दिन कर्रा (सख़्त) दिन है। काफ़िरों पर आसान नहीं (پ۲۹،المدثر:۹،۱۰))। लिहाज़ा आयात में तआरुज़ नहीं और हो सकता है कि क़ियामत का दिन पचास हज़ार साल का हो मगर बा'ज़ को एक हज़ार साल का मह़सूस हो, बा'ज़ को इस से भी कम ह़त्ता कि अबरार (नेकूकारों) को एक साअ़त का मह़सूस होगा जैसे एक ही रात आराम वाले को छोटी मह़सूस होती है तक्लीफ़ वाले को बड़ी।

(मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7, स. 67 ब तसर्रुफ़)

अ़ज़ाबे क़ब्रो मह़शर से बचा लो नारे दोज़ख़ से

ख़ुदारा साथ ले के जाओ जन्नत या रसूलल्लाह !

(वसाइले बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़ुरबत पर सब्र

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह सब फ़ज़ाइल उस ग़रीब मुसल्मान के लिये हैं जो अपनी ग़ुरबत पर **सब्र** करे। हर वक़्त जम्ए माल के चक्कर में पड़ा रहने वाला, अमीरों और उन की ने'मतों को देख देख कर दिल जलाने या ह़सद की आफ़त में मुब्तला होने वाला मुफ़्लिसो नादार जो अपनी ग़ुरबत पर साबिर नहीं वोह बयान कर्दा इन्आ़म का मुस्तह़िक़ नहीं और अगर बद क़िस्मती से बे सब्री में मज़ीद आगे बढ़ गया तो फिर ज़िल्लतो रुस्वाई मुक़द्दर बन सकती है। पस ! नादारों और मुसीबत के मारों को भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **ख़ुफ़्या तदबीर से डरते रहना ज़रूरी है** क्यूं कि हो सकता है इन आफ़तों के ज़रीए आज़्माइश में डाला गया हो और गिला शिक्वा, बे सब्री और ग़ुरबत व मुसीबत को

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

ह़राम ज़राएअ़ से ख़त्म करने की कोशिशें आख़िरत में तबाही व बरबादी का सबब बन जाएं।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़द्दिस इब्ने जौज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : "मोह़ताजी एक मरज़ की मानिन्द है जो इस में मुब्तला हुवा और सब्र किया वोह इस का अज्रो सवाब पाएगा, इसी लिये मोह़ताज व ग़रीब लोग जिन्हों ने अपने **फ़क्र व ग़ुरबत पर सब्र किया होगा,** अमीरों से **500** साल पहले जन्नत में दाख़िल हो जाएंगे।" (تلبیس ابلیس، ص۲۲۵)

रहें सब शाद घर वाले शहा थोड़ी सी रोज़ी पर
अ़ता हो दौलते सब्रो क़नाअ़त या रसूलल्लाह !

(वसाइले बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

क्या मालदार ग़रीबों से अ़मल में सब्क़त रखते हैं ?

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से मरवी है कि "मुहाजिरीन फु-क़रा, बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया : या **रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मालदार लोग बुलन्द मरातिब और अ-बदी ने'मतें ले गए।" सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : वोह कैसे ? तो उन्हों ने अ़र्ज़ की : वोह हमारी त़रह़ नमाज़ पढ़ते हैं और हमारी त़रह़ रोज़े भी रखते हैं, वोह स-दक़ा करते हैं हम स-दक़ा नहीं कर सकते, वोह गरदनें छुड़ाते (या'नी ग़ुलाम आज़ाद करते) हैं, हम गरदनें नहीं छुड़ा सकते। तो सरकारे आ़ली वक़ार, ग़रीबों के ग़म गुसार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न सिखा दूं, जिस के ज़रीए़ तुम उन लोगों के साथ

मिल जाओ जो तुम से आगे हैं और उन पर सब्क़त ले जाओ जो तुम से पीछे हैं ? और कोई भी तुम से अफ़्ज़ल न हो सिवाए उस शख़्स के जो तुम्हारी त़रह़ अ़मल करे।'' सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ किया **: ''या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! ज़रूर सिखाइये।'' इर्शाद फ़रमाया **:** ''तुम हर नमाज़ के बा'द **33, 33** मर्तबा तस्बीह़ (سُبْحٰنَ اللّٰه), तह़मीद (اَلْحَمْدُ لِلّٰه) और तक्बीर (اَللّٰهُ اَكْبَر) पढ़ा करो।''

(مسلم،کتاب المساجدالخ،باب استحباب ذکر بعد الصلاۃالخ، ص ۳۰۰، حدیث:۵۹۵)

मैं बेकार बातों से बच के हमेशा
करूं तेरी ह़म्दो सना या इलाही

(वसाइले बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़रीब व मिस्कीन ख़लीफ़ा

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 590 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की 425 ह़िकायात''** के सफ़ह़ा **187** पर है **: अमीरुल मुअमिनीन** ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में ईद से एक दिन क़ब्ल आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْعَزِيْز की **शहज़ादियां** ह़ाज़िर हुईं और बोलीं **: ''बाबाजान !** कल ईद के दिन हम कौन से कपड़े पहनेंगी ?'' फ़रमाया **:** ''येही कपड़े जो तुम ने पहन रखे हैं, इन्हें धो लो, कल पहन लेना !'', ''नहीं ! **बाबाजान !** आप हमें नए कपड़े बनवा दीजिये,'' बच्चियों ने ज़िद करते हुए कहा। आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया **:** ''मेरी बच्चियो ! ईद का दिन **अल्लाहु**

रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّ وَجَلَّ की इबादत करने, उस का शुक्र बजा लाने का दिन है, नए कपड़े पहनना ज़रूरी तो नहीं !", "**बाबाजान !** आप का फ़रमाना बेशक दुरुस्त है लेकिन हमारी सहेलियां हमें ता'ने देंगी कि तुम अमीरुल मुअमिनीन की लड़कियां हो और ईद के रोज़ भी वोही पुराने कपड़े पहन रखे हैं !" येह कहते हुए बच्चियों की आंखों में **आंसू** भर आए। बच्चियों की बातें सुन कर आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का दिल भी भर आया। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने **ख़ाज़िन** (वज़ीरे मालियात) को बुला कर फ़रमाया **:** "मुझे मेरी एक माह की तन-ख़्वाह पेशगी ला दो।" "**ख़ाज़िन** ने अ़र्ज़ की **: हुज़ूर !** क्या आप को यक़ीन है कि आप एक माह तक ज़िन्दा रहेंगे ?" आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने फ़रमाया **:** "**جَزَاکَ الله** **:** तू ने बेशक उ़म्दा और सह़ीह़ बात कही।" **ख़ाज़िन** चला गया। आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने बच्चियों से फ़रमाया **:** "प्यारी बेटियो ! **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَ صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा पर अपनी ख़्वाहिशात को क़ुरबान कर दो।" (मा'दने अख़्लाक़, ह़िस्सए अव्वल, स. 257)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّ وَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تعالىٰ علىٰ محمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी अपने अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلام के नक़्शे क़दम पर चलते हुए तंग दस्तियों, मोह़ताजियों और घरेलू परेशानियों से घबरा कर गिला शिक्वा करने के बजाए हमेशा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की बारगाह में रुजूअ़ करना चाहिये और उस की रिज़ा पर राज़ी रहना चाहिये और दुआ़ की कसरत करनी चाहिये जैसा कि

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है । (طبرانی)

परेशान ह़ाल की दुआ़

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : हुज़ूर ! अहलो इ़याल की फ़िक्र ने मुझे परेशान कर रखा है । मेरे ह़क़ में दुआ़ फ़रमाइये । जवाब दिया : "तेरे अहलो इ़याल जब तुझ से आटा और रोटी न होने की शिकायत करें तो उस वक़्त **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** से दुआ़ किया कर कि तेरी उस वक़्त की दुआ़ क़बूलिय्यत के ज़ियादा क़रीब है ।" (روض الریاحین، ص۲۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस की तंगदस्ती उ़रूज पर होगी यक़ीनन वोह बेह़द दुखी और ग़मगीन होगा और दुख्यारों की दुआ़ क़बूल होती है जैसा कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताबे मुस्तत़ाब "**फ़ज़ाइले दुआ़**" में आ'ला ह़ज़रत के वालिदे मेह्रबान रईसुल मु-तकल्लिमीन ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان ने मुस्तजाबुद्दा'वात शख़्सिय्यात (या'नी जिन लोगों की दुआएं क़बूल होती हैं उन) में सब से पहले नम्बर पर लिखा है, "अव्वल : **मुज़्त़र** (या'नी बेचैन व परेशान ह़ाल) ।"

इस की शर्ह़ में सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : इस (या'नी दुख्यारे और लाचार की दुआ़ की क़बूलिय्यत) की त़रफ़ तो ख़ुद क़ुरआने अ़ज़ीम में इशारा मौजूद :

اَمَّنْ یُّجِیْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَ یَكْشِفُ السُّوْٓءَ (پ۲۰، النمل:٦٢)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : या वोह जो लाचार की सुनता है, जब उसे पुकारे और दूर कर देता है बुराई। (फ़ज़ाइले दुआ, स. 218)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! दुन्या की रंगीनियों में गुम मालदार व साहिबे इक़्तिदार के मुक़ाबले में सुन्नतों का पाबन्द ग़रीब व नादार ख़ुश नसीब व बख़्त बेदार है और वोह आख़िरत में काम्याब है जो ग़ुरबत, अमराज़ व आफ़ात में मुब्तला होने के बा वुजूद **अल्लाहु ग़फ़्फ़ार** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूले ज़ी वक़ार صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का इताअ़त गुज़ार है।

ज़बां पर शिक्वए रन्जो अलम लाया नहीं करते
नबी के नाम लेवा ग़म से घबराया नहीं करते

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मिस्कीनों के लिये जन्नत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वोह मुसल्मान जो आज अहले दुन्या की नज़र में ह़क़ीर तसव्वुर किये जाते हैं, ग़रीब समझ कर ह़ल्क़ए अह़बाब से दूर कर दिये जाते हैं, क़िल्लते माल के सबब मुंह नहीं लगाए जाते, लेकिन क़ुरबान जाइये **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पर कि येही लोग जन्नत के लिये बाइ़से इ़ज़्ज़त व अ़-ज़मत हैं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि ग़रीबों के मल्जा व मावा, अह़मदे मुज्तबा, मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वाला शान है : "जहन्नम और जन्नत में मुबा-ह़सा हुवा तो जहन्नम ने कहा : "मुझे ज़ालिम और मु-तकब्बिर लोगों के साथ फ़ज़ीलत दी गई है।" जन्नत ने कहा : "मुझे क्या हुवा कि **मुझ में सिर्फ़ कमज़ोर व**

लाचार और आ़जिज़ लोग दाख़िल होंगे ।" तो **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** ने जन्नत से फ़रमाया : "ऐ जन्नत ! तू मेरी रह़मत है, मैं अपने बन्दों में से जिस पर चाहूंगा तेरे ज़रीए रह़म फ़रमाऊंगा ।" और दोज़ख़ से फ़रमाया : "ऐ जहन्नम ! तू मेरा अ़ज़ाब है मैं अपने बन्दों में से जिसे चाहूंगा तेरे ज़रीए अ़ज़ाब दूंगा ।" (مسلم،کتاب الجنۃالخ،باب النار یدخلھا الجبارون الخ،ص۱۵۲۴،حدیث:۲۸۴۶مختصرا)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ली बिन सुल्त़ान मुह़म्मद क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِى इस ह़दीसे पाक में मौजूद लफ़्ज़ "ضُعَفَاء" की वज़ाह़त करते हुए फ़रमाते हैं : "यहां कमज़ोरों से मुराद वोह मुसल्मान हैं जो **माली और जिस्मानी त़ौर पर कमज़ोर हैं ।"**

(مرقاۃ المفاتیح ،کتاب الفتن ،باب خلق الجنۃ و النار،۹/۶۶۲،تحت الحدیث:۵۶۹۴)

ताजो तख़्तो हुकूमत मत दे, कस्रते मालो दौलत मत दे
अपनी रिज़ा का दे दे मुज़्दा, या अल्लाह मेरी झोली भर दे

(वसाइले बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अक्सर जन्नती ग़रीब होंगे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ज़िक्र कर्दा रिवायते ज़ीशान ग़रीबों और मोह़ताजों के लिये किस क़दर ढारस निशान है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ गु-रबा व मसाकीन पर रह़म फ़रमाते हुए उन्हें जन्नत अ़त़ा फ़रमाएगा और जन्नत पाने वाले अक्सर वोह ख़ुश नसीब मुसल्मान होंगे जो दुन्या में फ़क़्रो फ़ाक़ा और ग़ुरबत की ज़िन्दगी बसर करते रहे होंगे जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़म्र رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सुल्त़ाने मदीनए मुनव्वरह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : "اِطَّلَعْتُ فِى الْجَنَّةِ فَرَاَيْتُ اَكْثَرَ اَهْلِهَا الْفُقَرَاءَ" या'नी मैं

ने जब जन्नत को मुला-हज़ा किया तो देखा कि **जन्नतियों में अक्सर ता'दाद फु-क़रा** (या'नी ग़रीब लोगों) **की है।''** (مسند احمد، مسند عبد اللّٰہ بن عباس، ۱/۵۰۴، حدیث:۲۰۸۶)

दे हुस्ने अख़्लाक़ की दौलत, कर दे अ़ता इख़्लास की ने'मत
मुझ को ख़ज़ाना दे तक़्वा का, या अल्लाह मेरी झोली भर दे

(वसाइले बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللّٰہُ تعالٰی علٰی محمَّد

दुआ़ए नबिय्ये रह़मत और मसाकीन से मह़ब्बत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ग़ुरबत व मिस्कीनी तो वोह आज़्माइश है जिस में मुब्तला मुसल्मान अगर सब्र का दामन थामे हुए ग़ौरो फ़िक्र करे तो उसे पता चलेगा कि अह़ादीसे मुबा-रका में ग़ु-रबा व मसाकीन के कितने फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं, इस्लाम में ऐसे लोग ह़क़ीर नहीं बल्कि लाइक़े मह़ब्बत हैं, जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मसाकीन से मह़ब्बत करो, क्यूं कि मैं ने रसूले ख़ुदा, मह़बूबे अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को दुआ़ में येह अल्फ़ाज़ शामिल फ़रमाते सुना : ''اَللّٰھُمَّ اَحْیِنِیْ مِسْکِیْنًا وَاَمِتْنِیْ مِسْکِیْنًا وَاحْشُرْنِیْ فِیْ زُمْرَةِ الْمَسَاکِیْنَ'' या'नी ऐ **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) ! मुझे मिस्कीनी की ह़ालत में ह़यात और **मिस्कीनी की ह़ालत में ही विसाल अ़ता फ़रमा और गुरौहे मसाकीन में मेरा ह़श्र फ़रमा ।''** (ابنِ ماجہ، کتاب الزھد، باب مجالسة الفقراء، ۴/۴۳۳، حدیث:۴۱۲۶) **शर-ई मस्अला :** याद रखिये कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बारगाहे इलाही में इ़ज्ज़ के तौ़र पर अपने आप को ज़ुम्रए मसाकीन में शामिल फ़रमाएं तो येह आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को रवा (या'नी जाइज़) है लेकिन हमारे लिये आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को ''फ़क़ीर व मिस्कीन'' कहना ना-रवा (या'नी जाइज़ नहीं) बल्कि ह़राम है । (फ़तावा अहले सुन्नत, ह़िस्सा : 8, स.118)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! गुरबत व मिस्कीनी अपने जिलौ (या'नी मइय्यत) में कितनी ब-र-कतें लिये हुए है कि शहन्शाहे खुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, रसूले बे मिसाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم भी गुरौहे मसाकीन में शामिल होने और इसी गुरौह को अपनी रफ़ाक़त की ब-र-कतों से नवाज़ने की ख़्वाहिश और इन से महब्बत की तल्क़ीन फ़रमा रहे हैं।

सलाम उस पर कि जिस के घर में चांदी थी न सोना था
सलाम उस पर कि टूटा बोरिया जिस का बिछोना था

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़ु-क़रा से महब्बत क़ुर्बते इलाही का सबब

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُ रिवायत करते हैं कि महबूबे रब्बुल इज़्ज़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने हज़रते सय्यि-दतुना आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا को मुख़ातब कर के इर्शाद फ़रमाया : ''يَا عَائِشَةُ اَحِبِّی الْمَسَاكِيْنَ وَقَرِّبِيهِمْ فَاِنَّ اللهَ يُقَرِّبُكِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ या'नी ऐ आइशा (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا) ! मिस्कीनों से महब्बत करो, उन्हें अपने क़रीब रखो ताकि **बरोज़े क़ियामत अल्लाह तआला तुम्हें अपने क़ुर्ब से नवाज़े।**''

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الرقاق، باب فضل الفقراء الخ، الفصل الثانی، ۲۵۵/۱، حدیث:۵۲۴۴ مختصراً)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हक़ीक़ी मुफ़्लिस कौन ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्यवी मालो ज़र की मोहताजी उख़्रवी ने'मतें पाने का सबब है बशर्ते कि सब्र का दामन हाथ से न छूटे। लिहाज़ा इस हालत से परेशान हों न तश्वीश में मुब्तला हों। तश्वीश नाक

ग़ुरबत तो आख़िरत की ग़ुरबत है और येही ग़ुरबत दर ह़क़ीक़त मुसीबत है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि पैकरे अन्वार, तमाम नबियों के सरदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या तुम जानते हो **मुफ़्लिस** कौन है ? सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : हम में **मुफ़्लिस** (या'नी ग़रीब, मिस्कीन) वोह है जिस के पास न दिरहम हों और न ही कोई माल। तो इर्शाद फ़रमाया : "**मेरी उम्मत में मुफ़्लिस वोह है** जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़ा और ज़कात ले कर आएगा लेकिन उस ने फ़ुलां को गाली दी होगी, फ़ुलां पर तोहमत लगाई होगी, फ़ुलां का माल खाया होगा, फ़ुलां का ख़ून बहाया होगा और फ़ुलां को मारा होगा। पस उस की नेकियों में से उन सब को उन का ह़िस्सा दे दिया जाएगा। अगर उस के ज़िम्मे आने वाले ह़ुक़ूक़ के पूरा होने से पहले उस की नेकियां ख़त्म हो गईं तो लोगों के गुनाह उस पर डाल दिये जाएंगे, फिर उसे जहन्नम में फेंक दिया जाएगा।" (مسلم، کتاب البر و الصلۃ الخ، باب تحریم الظلم، ص۱۳۹۴، حدیث:۲۵۸۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! डर जाओ ! लरज़ उठो ! ह़क़ीक़त में **मुफ़्लिस** वोह है जो नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात व स-दक़ात, सख़ावतों, फ़लाह़ी कामों और बड़ी बड़ी नेकियों के बा वुजूद बरोज़े क़ियामत ख़ाली का ख़ाली रह जाए ! कभी गाली दे कर, कभी तोहमत लगा कर, बिला इजाज़ते शर-ई डांट डपट कर, बे इ़ज़्ज़ती कर के, ज़लील कर के, मारपीट कर, आ़रियतन (या'नी आ़रिज़ी तौ़र पर) ली हुई चीज़ें क़स्दन न लौटा कर, क़र्ज़ दबा कर और दिल दुखा कर जिन को दुन्या में नाराज़ कर दिया होगा वोह उस की सारी नेकियां ले जाएंगे और नेकियां ख़त्म हो जाने की सूरत में उन के गुनाहों का बोझ उस पर डाल कर वासिले जहन्नम कर दिया जाएगा।

इलाही ! वासित़ा देता हूं मैं मीठे मदीने का
बचा दुन्या की आफ़त से, बचा उ़क़्बा की आफ़त से

(वसाइले बख़्शिश)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد
تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہ ! اَسْتَغْفِرُاللّٰہ
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुफ़्लिसी दूर करने का वज़ीफ़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने आख़िरत के ग़रीब और **ह़क़ीक़ी मुफ़्लिस** की बद नसीबी और दुन्यवी ग़रीब व मिस्कीन की खुश नसीबी के मु-तअ़ल्लिक़ जाना, हम में से हर एक का येह ज़ेहन होना चाहिये कि दुन्या में अगर मालो दौलत की कमी वग़ैरा जैसी आज़्माइश आ जाए तो वोह सब्र करते हुए उसे बरदाश्त करे और आख़िरत की ग़ुरबत से पनाह मांगे कि आख़िरत का ग़रीब ही दर ह़क़ीक़त बद नसीब है।

नीज़ येह भी ज़ेह्न नशीन फ़रमा लीजिये कि ब क़दरे किफ़ायत माल कमाना, दूसरों के दस्ते नगर (मोह़ताज व ह़ाजत मन्द) न होने, किसी पर बोझ न बनने और बर सरे रोज़गार होने की तमन्ना करना बुरा नहीं। इस त़रह़ की तमन्ना लिये हुए रोज़ी के लिये तगो दौ करना, अवरादो वज़ाइफ़ पढ़ना सालिह़ीन का त़रीक़ा है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने शी-रवैह رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं कि एक दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मश्हूर व मक़्बूल वली ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی की ख़िदमते बा ब-र-कत में एक तंगदस्त व मुफ़्लिस शख़्स ने अपनी ग़ुरबत की शिकायत की। आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "**अल्लाह**

तआ़ला तुझे अपने ह़िफ़्ज़ो अमान में रखे, अहलो इ़याल की त़रफ़ लौट जा और येह अल्फ़ाज़ विर्दे ज़बां रख : ''مَا شَآءَ اللّٰهُ كَانَ (**अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने जो चाहा वोही हुवा) ।''

वोह शख़्स येह विर्द करता हुवा घर की त़रफ़ जा ही रहा था कि रास्ते में उस की मुलाक़ात एक अन्जान शख़्स से हुई जिस ने उस को एक थेली पकड़ाई और चला गया । ग़रीब शख़्स ने जब थेली खोली तो दीनारों से भरी हुई थी, वोह बहुत ख़ुश हुवा और वहीं से वापस पलट कर ह़ज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्ख़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो गया ताकि इस पेश आने वाले वाक़िए़ की रूदाद बताए आप رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने उस शख़्स को देखते ही फ़रमाया : ''ऐ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के बन्दे ! जब तेरी ह़ाजत पूरी हो गई थी तो वापस क्यूं आया ? **अल्लाहु रह़मान** عَزَّ وَجَلَّ तुझे अपने ह़िफ़्ज़ो अमान में रखे, अहलो इ़याल की त़रफ़ येह कहते हुए लौट जा : ''مَا شَآءَ اللّٰهُ كَانَ'' (عیون الحکایات، ص۲۷۸)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صلى الله تعالى عليه واله وسلم

क्यूंकर न मेरे काम बनें ग़ैब से ह़सन
बन्दा भी हूं तो कैसे बड़े कारसाज़ का

(ज़ौक़े ना'त)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

रोज़ी में ब-र-कत का बेहतरीन नुस्ख़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन सा'द साइ़दी رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ बयान

करते हैं कि एक शख़्स ने हु़ज़ूरे अक्दस, शफ़ीए रोज़े मह़शर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हो कर अपनी ग़ुरबत और तंगदस्ती की शिकायत की। नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब तुम अपने घर में दाख़िल हो तो सलाम करो अगर्चे कोई भी न हो, फिर मुझ पर सलाम भेजो और एक बार قُلْ هُوَ اللّٰه शरीफ़ पढ़ो। उस शख़्स ने ऐसा ही किया तो **अल्लाह तआ़ला** ने उसे इतना मालदार कर दिया कि उस ने अपने हमसायों और रिश्तेदारों में भी तक्सीम करना शुरूअ़ कर दिया। (القول البدیع،الباب الثانی فی ثواب الصلاۃ علی رسول اللّٰہ الخ، ص۲۷۳)

तंगदस्ती का इलाज

मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ **419** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''म-दनी पंजसूरह''** सफ़ह़ा **246** पर है : **''یَا مَلِکُ''** **90** बार जो ग़रीब व नादार रोज़ाना पढ़ा करे اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ग़ुरबत से नजात पाएगा। (म-दनी पंजसूरह, स. 246)

तू है मो'त़ी वोह हैं क़ासिम येह करम है तेरा
तेरे मह़बूब के टुकड़ों पे पलूंगा या रब

(वसाइले बख़्शिश)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

रिज़्क़ में ब-र-कत का वज़ीफ़ा

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ किताब ''मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत'' के सफ़ह़ा 128 पर है : एक सह़ाबी (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ) ख़िदमते अक्दस (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : दुन्या ने मुझ से पीठ फेर ली। फ़रमाया :

क्या वोह तस्बीह़ तुम्हें याद नहीं जो तस्बीह़ है मलाएका की और जिस की ब-र-कत से रोज़ी दी जाती है। ख़ल्क़े दुन्या आएगी तेरे पास ज़लीलो ख़्वार हो कर, तुलूए़ फ़ज्र के साथ सो बार कहा कर ''سُبْحٰنَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ سُبْحٰنَ اللّٰہِ الْعَظِیْمِ وَ بِحَمْدِہٖ اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ'' । उन सहा़बी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को सात दिन गुज़रे थे कि ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : ''हु़ज़ूर ! दुन्या मेरे पास इस कसरत से आई, मैं ह़ैरान हूं कहां उठाऊं कहां रखूं !'' (لسان المیزان، حرف العین، ۳۰۴/٤، حدیث: ۵۱۰۰،زرقانی علی المواھب، ذکر طبه صلی اللّٰہ علیه وسلم من داء الفقر،۴۲۸/۹واللفظ له)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अच्छों की सोह़बतें और नेकों की दुआ़एं ज़रूर अपना रंग दिखाती हैं। आफ़ातो बलिय्यात और मुश्किलात में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बरगुज़ीदा बन्दों से मदद त़लब करने से बलाएं टलती और मुश्किलें काफ़ूर होती हैं।

नीज़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के म-दनी माह़ोल से वाबस्ता होने और आ़शिक़ाने रसूल के साथ म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने की ब-र-कत से भी ह़ाजात बर आने, मुश्किलात ह़ल होने और मसाइब दूर होने के बे शुमार वाक़िआ़त मिलते हैं, जैसा कि **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ **1548** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''**फ़ैज़ाने सुन्नत**'' जिल्द अव्वल सफ़ह़ा **980** पर है :

म-दनी बहार : K.E.S.C में नोकरी मिल गई

ओरंगी टाउन (बाबुल मदीना कराची) के एक ज़िम्मादार इस्लामी भाई ने अपने **म-दनी माह़ोल** में आने और सिल्सिलए रोज़गार पाने का

वाक़िआ़ कुछ यूं बयान फ़रमाया : **19.6.2003** को एक इस्लामी भाई के दा'वत देने पर **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की त़रफ़ रुख़ हुवा मगर पाबन्दी नहीं थी। बे रोज़गारी के सबब परेशानी थी, एक इस्लामी भाई की **इन्फ़िरादी कोशिश** के नतीजे में **म-दनी क़ाफ़िला कोर्स** के लिये दा'वते इस्लामी के आ़लमी मर्कज़ **फ़ैज़ाने मदीना** में दाख़िला ले लिया। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बतों और ब-र-कतों ने मुझ गुनहगार पर म-दनी रंग चढ़ा दिया, और जीने का ढंग सिखा दिया। **म-दनी क़ाफ़िला कोर्स** पूरा करने के दूसरे या तीसरे दिन बा'ज़ दोस्तों ने बताया कि K.E.S.C को मुलाज़िमों की ज़रूरत है, हम ने भी दर-ख़्वास्तें जम्अ़ करवा दी हैं आप भी करवा दीजिये। मैं ने अ़र्ज़ की, आज कल सिर्फ़ दर-ख़्वास्तों पर कहां ! सिफ़ारिशों (बल्कि रिश्वतों) पर नोकरियों की तरकीब बनती है ! अपने पास तो कुछ भी नहीं। बिल आख़िर उन के इसरार पर मैं ने ''दर-ख़्वास्त'' जम्अ़ करवा दी। इब्तिदाअन तह़रीरी टेस्ट हुए फिर इन्टरव्यू के बा'द मेडीकल टेस्ट की सूरत बनी। बे शुमार अ-सरो रुसूख़ वाली दर-ख़्वास्तों के बा वुजूद मैं वाह़िद ऐसा था कि हर जगह काम्याब रहा ! फ़ाइनल इन्टरव्यू में घर वालों ने ज़ोर दिया कि पेन्ट शर्ट पहन कर जाओ मगर मैं तो **आ़शिक़ाने रसूल** की सोह़बत की ब-र-कत से इंग्रेज़ी लिबास तर्क कर चुका था लिहाज़ा सफ़ेद शलवार क़मीस में ही पहुंच गया। अफ़्सर ने मेरा **मज़्हबी ह़ुल्या** देख कर मुझ से बा'ज़ इस्लामी मा'लूमात के सुवालात किये। जिन के मैं ने ब आसानी जवाबात दे दिये क्यूं कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं ने येह सब

म–दनी क़ाफ़िला कोर्स के अन्दर सीखे हुए थे। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ बिग़ैर किसी सिफ़ारिश व रिश्वत के मुझे **मुला–ज़मत** मिल गई। हमारे घर वाले **दा'वते इस्लामी** के म–दनी क़ाफ़िला कोर्स और म–दनी माहोल की ब–र–कत देख कर दंग रह गए और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** के मुहिब बन गए। येह बयान देते वक़्त اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मैं दा'वते इस्लामी की **अ़लाक़ाई मुशा–वरत** के ख़ादिम (निगरान) की हैसिय्यत से अपने अ़लाक़े में सुन्नतों के डंके बजा रहा हूं और **म–दनी इन्आ़मात** व म–दनी क़ाफ़िलों की धूमें मचा रहा हूं।

नोकरी चाहिये, आइये आइये   क़ाफ़िले में चलें, क़ाफ़िले में चलो
तंगदस्ती मिटे, दूर आफ़त हटे   लेने को ब–र–कतें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है **:** "जिस ने मेरी **सुन्नत** से **मह़ब्बत** की उस ने मुझ से **मह़ब्बत** की और जिस ने मुझ से **मह़ब्बत** की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा।"

(مِشْكَاةُ الْمَصَابِيح،كتاب الايمان،باب الاعتصام بالكتاب الخ،الفصل الثانى، ۱/۵۵، حديث:۱۷۵)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद पढ़ कर अपनी मजालिस को आरास्ता करो कि तुम्हारा दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (فردوس الاخبار)

"म-दनी हुल्या अपनाओ" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से लिबास के 14 म-दनी फूल

तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुला-हज़ा हों : ۞ जिन्न की आंखों और लोगों के सित्र के दरमियान पर्दा येह है कि जब कोई कपड़े उतारे तो بِسْمِ اللّٰه कह ले (اَلْمُعْجَمُ الْاَوْسَط،٢/٥٩،حدیث:٢٠٠٤) **मुफ़स्सिरे** शहीर **हकीमुल उम्मत** हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : जैसे दीवार और पर्दे लोगों की निगाह के लिये आड़ बनते हैं ऐसे ही येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र जिन्नात की निगाहों से आड़ बनेगा कि जिन्नात इस (या'नी शर्मगाह) को देख न सकेंगे (मिरआत, जि. 1, स. 268) ۞ जो शख़्स कपड़ा पहने और येह पढ़े : **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ كَسَانِیْ هٰذَا وَرَزَقَنِیْهِ مِنْ غَیْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّةٍ**[1] तो उस के अगले पिछले गुनाह मुआफ़ हो जाएंगे (شُعَبُ الْاِیمان،٥/١٨١ حدیث:٦٢٨٥) ۞ जो बा वुजूदे क़ुदरत ज़ैबो ज़ीनत का लिबास पहनना तवाज़ोअ़ (या'नी आजिज़ी) के तौर पर छोड़ दे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को करामत का हुल्ला पहनाएगा (ابوداوٗد،٤/٣٢٦، حدیث:٤٧٧٨) ۞ **ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रहमतुल्लिल आ-लमीन** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक लिबास अक्सर सफ़ेद कपड़े का होता (كَشْفُ الْاِلْتِباس فِی اسْتِحْبابِ اللِّباس لِلشَّیْخ عبدالْحَقّ الدّھلوی ص٣٦) ۞ लिबास हलाल

---

1 : तरजमा : तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये जिस ने मुझे येह कपड़ा पहनाया और मेरी ताक़त व क़ुव्वत के बिग़ैर मुझे अ़ता किया।

कमाई से हो और जो लिबास ह़राम कमाई से ह़ासिल हुवा हो, उस में फ़र्ज़ व नफ़्ल कोई नमाज़ क़बूल नहीं होती (اَيضاً ص٤١) ❁ **मन्क़ूल** है : जिस ने बैठ कर इमामा बांधा, या खड़े हो कर सरावील (या'नी पाजामा या शलवार) पहनी तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे ऐसे मरज़ में मुब्तला फ़रमाएगा जिस की दवा नहीं (اَيضاً ص ٣٩) ❁ पहनते वक़्त सीधी त़रफ़ से शुरूअ़ कीजिये (कि सुन्नत है) म-सलन जब कुरता पहनें तो पहले सीधी आस्तीन में सीधा हाथ दाख़िल कीजिये फिर उलटा हाथ उलटी आस्तीन में (اَيضاً٤٣) ❁ इसी त़रह़ पाजामा पहनने में पहले सीधे पाइंचे में सीधा पाउं दाख़िल कीजिये और जब (कुरता या पाजामा) उतारने लगें तो इस के बर अ़क्स (उलट) कीजिये या'नी उलटी त़रफ़ से शुरूअ़ कीजिये ❁ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द 3 सफ़ह़ा 409 पर है : सुन्नत येह है कि दामन की लम्बाई आधी पिंडली तक हो और आस्तीन की लम्बाई ज़ियादा से ज़ियादा उंग्लियों के पोरों तक और चौड़ाई एक बालिश्त हो (رَدُّالْمُحتار،٩/٥٧٩) ❁ सुन्नत येह है कि मर्द का तहबन्द या पाजामा टख़्ने से ऊपर रहे (मिरआत, जि. 6, स. 94) ❁ मर्द मर्दाना और औ़रत ज़नाना ही लिबास पहने। छोटे बच्चों और बच्चियों में भी इस बात का लिह़ाज़ रखिये ❁ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 481 पर है : मर्द के लिये नाफ़ के नीचे से घुटनों के नीचे तक "औ़रत" है, या'नी इस का छुपाना फ़र्ज़ है। नाफ़ इस में दाख़िल नहीं और घुटने दाख़िल हैं। (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار،٢/٩٣)

इस ज़माने में बहुतेरे ऐसे हैं कि तहबन्द या पाजामा इस त़रह़ पहनते हैं कि **पेडू** (या'नी नाफ़ के नीचे) का कुछ ह़िस्सा खुला रहता है, अगर कुरते वग़ैरा से इस त़रह़ छुपा हो कि जिल्द (या'नी खाल) की रंगत न चमके तो ख़ैर, वरना **ह़राम** है और नमाज़ में चौथाई की मिक़्दार खुला रहा तो नमाज़ न होगी (बहारे शरीअ़त) ख़ुसूसन ह़ज व उ़म्रे के एह़राम वाले को इस में सख़्त एह़तियात़ की ज़रूरत है ۞ आज कल बा'ज़ लोग सरे आ़म लोगों के सामने नीकर (हाफ़ पेन्ट) पहने फिरते हैं जिस से उन के घुटने और रानें नज़र आती हैं येह **ह़राम** है, ऐसों के खुले घुटनों और रानों की त़रफ़ नज़र करना भी **ह़राम** है। बिल ख़ुसूस खेलकूद के मैदान, वरज़िश करने के मक़ामात और साह़िले समुन्दर पर इस त़रह़ के मनाज़िर ज़ियादा होते हैं। लिहाज़ा ऐसे मक़ामात पर जाने में सख़्त एह़तियात़ ज़रूरी है ۞ **तकब्बुर** के त़ौर पर जो लिबास हो वोह मम्नूअ़ है। **तकब्बुर** है या नहीं इस की शनाख़्त यूं करे कि इन कपड़ों के पहनने से पहले अपनी जो ह़ालत पाता था अगर पहनने के बा'द भी वोही ह़ालत है तो मा'लूम हुवा कि इन कपड़ों से **तकब्बुर** पैदा नहीं हुवा। अगर वोह ह़ालत अब बाक़ी नहीं रही तो **तकब्बुर** आ गया। लिहाज़ा ऐसे कपड़े से बचे कि **तकब्बुर** बहुत बुरी सिफ़त है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 409, رَدُّالْمُحتار،۹/۵۷۹)

(163 म-दनी फूल,स. 20)

म-दनी हुल्या

दाढ़ी, ज़ुल्फ़ें, सर पर सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ (सब्ज़ रंग गहरा
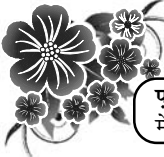
या'नी डार्क न हो) कली वाला सफ़ेद कुरता सुन्नत के मुत़ाबिक़ आधी पिंडली तक लम्बा, आस्तीनें एक बालिश्त चौड़ी, सीने पर दिल की जानिब वाली जेब में नुमायां मिस्वाक, पाजामा या शलवार टख़्नों से ऊपर । (सर पर सफ़ेद चादर और पर्दे में पर्दा करने के लिये **म-दनी इन्आ़मात** पर अ़मल करते हुए कथ्थई चादर भी साथ रहे तो मदीना मदीना)

दुआ़ए अ़त्त़ार : या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **!** मुझे और **म-दनी हुल्ये** में रहने वाले तमाम इस्लामी भाइयों को सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के साए में शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में अपने प्यारे मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस नसीब फ़रमा । **या अल्लाह !** सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा । اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

उन का दीवाना इमामा और ज़ुल्फ़ो रीश में
लग रहा है म-दनी हुल्ये में वोह कितना शानदार

सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो[2] कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

ماخذومراجع

قرآن مجید

نمبرشمار	کتاب	مطبوعہ
1	کنزالایمان فی ترجمۃ القرآن	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی
2	صحيح مسلم	دار المغنی،عرب شريف ١٤١٩ھ
3	جامع ترمذی	د ار المعرفه، بيروت ١٤١٤ھ
4	سنن ابی داؤد	دار احياء التراث العربی، بيروت ١٤٢١ھ
5	سنن ابن ماجه	دار المعرفه، بيروت ١٤٢٠ھ
6	المستدرك علی الصحيحين	دارالمعرفة،بيروت١٤١٨ھ
7	مسند احمد بن حنبل	دارالفكر، بيروت١٤١٤ھ
8	مشكاةالمصابيح	د ار الكتب العلميه بيروت ١٤٢١ھ
9	القول البديع	مؤسسةالريان بيروت ١٤٢٢ھ
10	المعجم الاوسط	دار احياء التراث العربی، بيروت ١٤٢٢ھ
11	شعب الايمان	دار الكتب العلميه، بيروت ١٤٢١ھ
12	مرقاة المفاتيح	دار الفكر، بيروت ١٤١٤ھ
13	ردالمحتار	دار المعرفه، بيروت ١٤٢٠ھ
14	الدرالمختار	دار المعرفه، بيروت ١٤٢٠ھ
15	مكاشفة القلوب	دارالكتب العلمية،بيروت
16	روض الرياحين	دارالكتب العلمية،بيروت١٤٢١ھ
17	تلبيس ابليس	دارالكتاب العربی، بيروت ١٤١٣ھ
18	عيون الحكايات	دارالكتب العلمية، بيروت١٤٢٤ھ
19	كشف الالتباس	دار احياء العلوم،باب المدينه١٤٢٤ھ
20	مراۃ المناجیح	نعیمی کتب خانہ، گجرات
21	بہارشریعت	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

22	فضائل دعا	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
23	فیضان سنت	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۲۸ھ
24	مدنی پنج سورہ	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
25	معدن اخلاق	شرکتہ قادریہ، سنجھورو، باب الاسلام سندھ1980ء
26	حضرت سیدنا عمر بن عبدالعزیز کی 425حکایات	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
27	حدائق بخشش	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
28	ذوق نعت	ضیاء الدین پبلی کیشنز 1992ء
29	وسائل بخشش مرمّم	مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۵ھ

फ़ेहरिस्त

बयान करने की निय्यतें

۞ ह़म्दो सलात और म–दनी माह़ोल में पढ़ाए जाने वाले दुरूदो सलाम पढ़ाऊंगा ۞ दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत बता कर صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب! कहूंगा यूं ख़ुद भी दुरूदे पाक पढूंगा और दूसरों को भी पढ़ाऊंगा ۞ सुन्नी आ़लिम की किताब से पढ़ कर बयान करूंगा ۞ पारह 14, **सू–रतुन्नह़्ल**, आयत 125 : اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ (**तर–ज–मए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (ह़दीस 4361) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَلَوْ آيَة ـ या'नी ''पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो'' में दिये हुए अह़काम की पैरवी करूंगा ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़–रबी, इंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इ़ल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा ۞ म–दनी क़ाफ़िले, म–दनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा ।

(सवाब बढ़ाने के नुस्ख़े, स. 29)

बयान सुनने की निय्यतें

﴾म–दनी चेनल के नाज़िरीन भी इन में से ह़स्बे ह़ाल निय्यतें कर सकते हैं﴿

۞ निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा ۞ صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب، اُذْكُرُوا الله، تُوبُوْا اِلَى الله वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसा–फ़ह़ा और इन्फ़िरादी कोशिश करूंगा।

(सवाब बढ़ाने के नुस्ख़े, स. 30)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
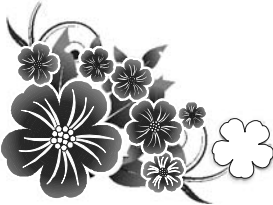
तंगदस्ती और ख़ौफ़ का इलाज

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : खाना खाने के बा'द **सूरए इख़्लास** और **सूरए कुरैश** (दोनों सूरतें) पढ़े । (احیاء العلوم ج۲ص۸) ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद मुर्तज़ा ज़बीदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इस के तह़्त लिखते हैं : खाने के बा'द **सूरए इख़्लास** पढ़ना ह़ुसूले ब-र-कत के लिये है और **सूरए इख़्लास** पढ़ने से फ़क़्र या'नी तंगदस्ती दूर होती है जब कि **सूरए कुरैश** पढ़ने से ख़ौफ़ और भूक से अमान ह़ासिल होगी । (مُلَخَّص از اتحاف السادۃ المتقین ج۵ص۵۹۹)

मक-त-बतुल मदीना की शाख़ें

मुम्बई : 19, 20, मुह़म्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुधोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुधोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया

Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net